शिक्षा में जेण्डर और समावेशी परिप्रेक्ष्य
(F-6)

[इकाई - 1 समावेशी शिक्षा की समझ]

* भारतीय समाज में समावेशन और अपवर्जन के विभिन्न रूप (हाशिये का समाज, जेण्डर, विशेष आवश्यकतावाले बच्चे - दिव्यांगजन)

समावेशन युक्त शिक्षा का अर्थ है सामान्य विद्यार्थियों के साथ विशिष्ट बालकों को सामान्य नियमित कक्षाओं और विद्यालयों में शिक्षा देना। विशिष्ट बच्चों के लिए उनके हिसाब से सहायक उपकरण का व्यवस्था करना। तथा उनके लिए विशेष प्रशिक्षित ~~शिक्षक~~ शिक्षक का भी व्यवस्था करना।

अपवर्जन एक ऐसी अनैतिक क्रिया है, जो विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बालकों को केवल शारीरिक या मानसिक रूप से ही नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से भी क्षीण कर देता है। उन्हें शिक्षा से वंचित कर देता है। और उन्हें किसी काम के लायक नहीं माना जाता है।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Page No.
Date

हाशिए का समाज

हाशिए के समाज में वंचित वर्ग आते है। वंचित वर्ग का अर्थ अभाव या विहीन। ऐसा व्यक्ति या समाज जिसको सुविधाओं से अलग कर दिया गया हो या वो सुविधाओं का लाभ नही ले पा रहे हो। उनकी पहुँच वहा तक नही हुई हो। ऐसे में इनका पूरा जीवन गरीबी में ही बीत जाती है। और वह अशिक्षित ही रह जाते है।

वंचित वर्ग के प्रकार निम्न है–

i) माता-पिता के स्नेह से वंचित –
ii) शारीरिक विकलांगता –
iii) मानसिक विकलांगता –
iv) सांस्कृतिक दृष्टि से वंचित –
v) आर्थिक दृष्टि से वंचित –
vi) सामाजिक दृष्टि से वंचित वर्ग –

भारतीय समाज में जेण्डर

जेण्डर का अर्थ है महिला और पुरूष। जब महिला और पुरूष में भेदभाव किया जाता है तो उसे लिंग भेद कहते है। हमारे समाज में बहुत लिंग भेद किया जाता है। और ऐसी भी महिलाओं की कमि नही है जो देश का नाम रोशन कर रही है। लगभग सभी क्षेत्रों में महिला प्रमुख स्थान पर काम कर रही है। फिर भी समाज में लिंग भेद होते है। इसको दूर करने के लिए

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

सरकार ने विभिन्न कानून भी बनाये है जिससे इसमें कुछ सुधार आये है। इसे पूरी तरह खत्म करने के लिए समाज को भी अपना कदम बढ़ाना होगा।

⇒ विशेष आवश्यकतावाले बच्चे – दिव्यांगजन

ऐसे बालक जो शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक एवं सामाजिक गुणों की दृष्टि से अन्य बच्चों से भिन्न होते है, वह विशिष्ट बालक कहलाते है। ये बालक अपनी क्षमताओं योग्यताओं, व्यवहार, व्यक्तित्व आदि से अपनी आयु के बच्चे से पीछे अलग रह जाते है। इस प्रकार के बच्चे का विकास या तो इतना तीव्र या ज्यादा होता है कि वो अन्य बच्चों से आगे निकल जाते है। या इतना कम होता है कि वो बहुत पीछे रह जाते है।

जिन बालकों में शारीरिक कमियाँ, मानसिक कमियाँ होती है उन्हे दिव्यांग बालक कहते है। वो अपने इस कमियों के वजह से पढ़ाई में पीछे रह जाते है। इनपे विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इन्हे अपने जिंदगी यापन करने के लिए सहायक उपकरणों का जरूरत होता है। विद्यालय में यह सामान्य तरीके से शिक्षा ग्रहण कर सके इसके लिए विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों का बहाली भी किया जाता है

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.
Date

* कक्षाओं में विविधता और असमानता की समझ: पाठ्यचर्यात्मक और शिक्षणशास्त्रीय संदर्भ
पाठ्यचर्यात्मक संदर्भ में

प्राय: हर तरह की शिक्षण अधिगम पाठ्यक्रम पर आधारित होता है। शिक्षण का उद्देश्य कि सफलता और असफलता भी पाठ्यक्रम पर आधारित होता है। पाठ्यक्रम बालकों की शिक्षण अधिगम से संबंधित मौलिक आवश्यकताओं का पूर्ति करने वाला होना चाहिए। जिसमें उस ज्ञान और कौशल का स्पष्ट वर्णन होना चाहिए, जिसे बालक प्राप्त कर सके। पाठ्यक्रम बालक के इन्हीं विभिन्न कौशलों को निखारकर सामने लाने में मददकार होता है। ऐसे में ये जरूरी है कि पाठ्यक्रम सभी बालकों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाला हो।

समावेशी शिक्षा संबंधी पाठ्यक्रम भी यह सुनिश्चित करता है कि जिन मानकों की तहत पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। वे मानक इतने विस्तृत तथा व्यापक हो कि बालकों के अधिगम से संबंधित जरूरतें पूर्ण हो सके। यह मूल रूप से शारीरिक तौर पर निशक्त बच्चों के स्तर को ऊँचा उठाने में उपयोगी होता है। इससे उनमें विभिन्न प्रकार के कौशलों का विकास होता है।

पाठ्यक्रम की विशेषताएँ निम्न है—

i) पाठ्यक्रम में व्यवहारिकता होना चाहिए।
ii) सामान्य बालकों के साथ-साथ विशिष्ट बालकों को ध्यान में रखना चाहिए।
iii) पाठ्यक्रम अलगाव से एकीकृत होने वाला होना चाहिए।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.
Date

शिक्षण शास्त्रीय संदर्भ में -

समाज में अप्रत्यक्ष रूप से इतना भेदभाव है कि सामाजिक समावेशीकरण करना अत्यंत कठिन हो रहा है। यदि समाज समावेशीकरण चाहता है तो उसे सामान्य व विशिष्ट बालकों के मध्य भेदभाव को खत्म करना होगा। जब तक भेदभाव खत्म नही होगा तब तक समावेशीकरण संभव नही है।

समाज के सभी नागरिकों को समावेशीकरण के लिए आगे आने की जरूरत है। इस कड़ी में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। शिक्षक को स्वयं अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार होने की आवश्यकता है। शिक्षकों को उसके विकास में सहयोग करना चाहिए। उन्हें उचित अवसर देना चाहिए। जिससे विशिष्ट बालकों के मन में आत्मविश्वास बने। और वो भी एक जागरूक नागरिक बन सके। अगर शिक्षक विशिष्ट बालकों के प्रति सहानुभूति रखेंगे तो अन्य बालक भी उनके प्रति सहानुभूति रखना सीख जाते है।

* समावेशी शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता

समावेशी शिक्षा में सभी विद्यार्थी को समान शिक्षा दी जाती है। सभी विद्यार्थी का अर्थ है, ऐसे बच्चे भी जो शारीरिक विकलांग हो या कोई शारीरिक कमियां हो, जैसे सुनाई नहीं देना, चलने में कठिनाई होना, दिखाई नही देना इत्यादि इस शिक्षा में ऐसे बच्चों को विद्यालयी वातावरण

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

में थोड़ा बदलाव कर विशेष प्रशिक्षित शिक्षक के द्वारा सहाय उपकरण की मदद से शिक्षा दी जाती है।

समावेशी शिक्षा का आवश्यकता निम्नलिखित है—

i) इससे विशिष्ट बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है।

ii) सामान्य बच्चों की तरह उन्हें भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिया जाता है।

iii) उनमें हीन भावना पनपने से रोका जाता है।

iv) उनके अंदर की प्रतिभा को निखारा जा सकता है।

v) उनके लिए सहायक उपकरण की व्यवस्था किया जा सकता है।

vi) वो भी सामान्य, खुशहाल और सफल जिंदगी जी सके।

vii) वो भी एक जागरूक इंसान व नागरिक बन सके।

* समावेशी शिक्षा के लिए आकलन की प्रकृति एवं प्रक्रिया

आकलन छात्रों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। आकलन केवल सामान्य छात्रों तक सीमित नहीं रहता है बल्कि इसकी परिधि में वो भी बालक आ जाते है, जो विशिष्ट आवश्यकता रखते है। आकलन एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि यह समावेशीकरण की प्रक्रिया में योगदान देता है। साथ ही यह बच्चों में कौशलों का विकास करने में

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.
Date

सहायता करता है। विभिन्न निःशक्ता वाले बच्चों के लिए आकलन का विभिन्न प्रक्रिया है। जो निम्न है।

i) शारीरिक निःशक्ता वाले बच्चों का आकलन - जो बच्चे शारीरिक रूप से निःशक्त है। उनका शुरूआत में ही आकलन कर लेना जरूरी होता है। ताकि उन्हें उस तरह से परीक्षित किया जाए। जिससे उनका सही से बौद्धिक विकास हो सके।

ii) श्रव्य असमर्थता - जो बच्चे सुन नही सकते है, उनसे मौखिक रूप से परीक्षा लेना संभव नही है। इसीलिए इनसे लिखित ~~प~~ परीक्षा ली जाती है।

iii) दृश्य असमर्थता - श्रव्य असमर्थता की अपेक्षा दृश्य असमर्थता वाले की परीक्षण बिल्कुल अलग प्रकार की समस्या प्रस्तुत करता है। इसमें लिखित परीक्षा लेना तो बिल्कुल असंभव है। ऐसे में मौखिक परीक्षा ली जाती है। टेप-रिकॉडिर का प्रयोग किया जाता है। साथ ही ब्रेल लिपि का भी प्रयोग किया जाता है।

शारीरिक विकलांगता या किसी रूप में विशिष्ट बालकों के परीक्षण में लचीलापन रखा जाता है। परीक्षण का अवधी कम समय का रखा जाता है, ताकि वो थकावट महसूस नही करें या उनपे कोई मानसिक दबाव न परे।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner